सेमेस्टर II
हिन्दी शिक्षण '7 A'

Unit II: भाषिक योग्यताओं का विकास

1. श्रव्य – दृश्य एवं मौखिक अभिव्यक्ति कौशल का विकास

a. भाषायी कौशलों का विकास
b. भाषायी कौशलों का महत्व
c. भाषा के कौशल
d. श्रवण उद्देश्य एवं अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन
e. श्रवण कौशल के लिए श्रव्य सामग्री का प्रयोग
f. भाषायी कौशल - उच्चारण या बोलने का कौशल
g. मौखिक अभिव्यक्ति की आवश्यकता

2. पठन - योग्यता का विकास

a. पठन एवं वाचन शिक्षण कौशल
b. विद्यालय में हिन्दी शिक्षक द्वारा सस्वर वाचन एवं मौन-वाचन के अवसर
c. सस्वर वाचन व मौन वाचन में अन्तर
d. वाचन शिक्षण की विधियाँ
e. वाचन के लिए ध्यान देने योग्य बातें
f. उच्चारण के भेद

3. लिखित अभिव्यक्ति क्षमता का विकास

a. लेखन कौशल
b. लेखन शिक्षण की आवश्यकता
c. लेखन कौशल का महत्व
d. लेखन शिक्षण का समय
e. हिन्दी भाषा की लिखित शिक्षा
f. लिखित अभिव्यक्ति की शिक्षण विधियाँ
g. शुद्ध लेखन तत्व

By. Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

वाचन शिक्षण की विधियाँ

बोलने या वाचन का शिक्षण किस प्रकार किया जाय ? इसके लिए विद्वानों के अपने-अपने मत हैं, कुछ शिक्षाशास्त्रियों का मत है कि बालकों को अक्षरों का ज्ञान वाक्यों से आरम्भ करना उचित है, परन्तु कुछ के अनुसार शब्दों से प्रारम्भ किया जाय। वाचन सम्बन्धी शिक्षण पद्धतियाँ निम्न प्रकार प्रचलित हैं—

(1) **स्वरोच्चार विधि**—इस विधि में अक्षरों तथा शब्दों की ध्वनि को विशेष महत्व दिया जाता है। बालकों को शब्दों का ज्ञान कराने हेतु ध्वनि साम्य को आधार बनाया जाता है। जैसे—ठाठ, चाट, हाट, खाट इसी प्रकार हार, भार आदि। स्पष्ट है कि इसमें उच्चारण की ओर अधिक ध्यान दिया जाता है, परन्तु ध्वनियों के माध्यम से वाचन में कुशलता आ जाये यह आवश्यक नहीं है। इस कारण यह प्रणाली अपने आप में पूर्ण नहीं है।

Scanned with CamScanner

(2) देखो और कहो विधि—इस विधि में न तो पहले अक्षरों का ज्ञान कराया जाता है तथा न ही उनकी ध्वनियों का। इस विधि में प्रारम्भ में ही बालकों को शब्दों का परिचय कराया जाता है। इसके लिए चित्रों के माध्यम से शब्दों का ज्ञान कराया जाता है। एक शिक्षाशास्त्री ने इस प्रकार कहा है कि "यह पद्धति बड़ी ही आकर्षक और रोचक है। अनेक बार उस चित्र और शब्द को देखने के बाद उस शब्द का चित्र बालक के मानसपटल पर गहरा अंकित हो जाता है। जब-जब यह उस वस्तु का चित्र स्मरण करता है तब-तब उसे वह शब्द चित्र याद आता है।" इस शब्द चित्र में कई वर्ण होते हैं, जैसे—'शलगम' में श, ल, ग, म आदि। इन सभी वर्णों से वह भली-भाँति परिचित हो जाता है। यह विधि देखने व व्यवहार में बड़ी ही रोचक होती है, लेकिन इस विधि में बालकों का शब्द ज्ञान सीमित रह जाता है, केवल वे ही शब्द लिए जा सकते हैं जो बालक की अनुभव परिधि में हों। इसीलिए अपरिचित शब्दों को पढ़ाने में बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

(3) अक्षर-बोध विधि—यह विधि अत्यधिक पुरानी विधि है तथा आज तक भी इस विधि का प्रयोग भारतीय भाषाओं के लिए किया जाता है। इस विधि में बालक क्रमानुसार वर्णमाला के भिन्न-भिन्न अक्षरों का ज्ञान प्राप्त करते हैं तथा बालक अक्षरों का ज्ञान जब भली प्रकार कर लेते हैं तो उन्हें शब्द बनाना सिखाया जाता है।

उदाहरणार्थ—ब, र, ग, द = बरगद, प, न, घ ट = पनघट। कुछ विद्वान इसे अमनोवैज्ञानिक भी मानते हैं। उनके अनुसार एकदम वर्णमाला को रटने से घबराते हैं, क्योंकि रटना एक नीरस कार्य है। **शिक्षाविद् मेंजिल** इस विधि की आलोचना में लिखते हैं कि "बालकों का अधिकांश समय वर्णमाला को रटने में ही चला जाता है।"

(4) अनुकरण विधि—इस विधि को 'देखो और कहो' विधि का परिवर्तित रूप भी कह सकते हैं। इस विधि में अध्यापक एक-एक शब्द का उच्चारण करता जाता है तथा बालक उन शब्दों का उच्चारण का अनुकरण करता जाता है। इस विधि का प्रयोग अंग्रेजी भाषा शिक्षण में ज्यादा लाभदायक माना गया है, क्योंकि अंग्रेजी का उच्चारण अनिश्चित होता है, अर्थात् यह वहाँ ज्यादा उपयोगी है जहाँ एक अक्षर की एक से अधिक ध्वनियाँ बोली जाती हैं तथा लिखा कुछ और ही जाता है एवं पढ़ा कुछ और ही जाता है, जैसे Cut में u 'अ' की ध्वनि देता है जबकि दूसरे शब्द Put में u 'उ' की ध्वनि देता है। इसी प्रकार But में u भी 'अ' ध्वनि देता है। शब्द Calm 'काम' में l अक्षर बोला नहीं जाता। इस प्रकार प्रत्येक अक्षर की अपनी अलग ही ध्वनि है।

(5) ध्वनि साम्य विधि—इस विधि में इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि प्रारम्भिक अवस्था में बालकों के सामने वे ही शब्द रखे जायें, जिनकी राम, शाम, नाम, काम आदि इसी प्रकार धर्म, कर्म, गर्म, मर्म, लट्टू, निखट्टू आदि।

यह विधि प्रारम्भिक अवस्था के लिए तो उपयोगी है, लेकिन वाचन में निपुणता लाने के लिए यह विधि अत्यधिक उपयोगी सिद्ध नहीं होती।

(6) सामूहिक पाठन विधि—यह विधि भी अनुकरण विधि से मिलती-जुलती विधि है। अध्यापक सर्वप्रथम बालकों को (सम्पूर्ण कक्षा में) छोटे-छोटे पदों पद्य या बालगीतों का आदर्श वाचन करता है, समस्त कक्षा के बालक अध्यापक का अनुकरण करते चलते जाते हैं। इस विधि से बालकों का शब्द उच्चारण सुधारा जा सकता है, इसमें हाव-भाव द्वारा वाचन भी सीखता है। इस विधि का प्रयोग तभी किया जाता है जब बालकों को अक्षर ज्ञान भली प्रकार का हो।

Scanned with CamScanner

(7) भाषा-शिक्षण-यन्त्र विधि—इस विधि का प्रयोग भी अनुकरण विधि की तरह ही किया जाता है। अन्तर इतना-सा है कि अध्यापक के स्थान पर ग्रामोफोन, टेपरिकॉर्डर का प्रयोग किया जाता है। शुद्ध उच्चारण के लिए टेप या ग्रामोफोन को बजाया जाता है। इसे बालक बड़े ध्यान से सुनते हैं तथा वैसा ही उच्चारण करते हैं या करने का प्रयास करते हैं। इस विधि का लाभ यह है कि इसमें बालक व्यवस्थित उच्चारण की शिक्षा प्राप्त करते हैं तथा उनके उच्चारण में भी एकरूपता आ जाती है, लेकिन यह एक खर्चीली विधि है।

(8) वाक्य शिक्षण विधि—यह एक मनोवैज्ञानिक विधि है। इसमें पढ़ाने का क्रम वाक्य से आरम्भ किया जाता है। मनोवैज्ञानिकों का विश्वास है कि बालक अपने मनोभावों को न तो अक्षरों द्वारा प्रकट कर सकता है और न ही वह अक्षरों को जोड़-जोड़कर शब्दों का निर्माण कर सकता है। अतः इस विधि के समर्थकों के अनुसार पढ़ना सिखाने के लिए वाक्य शिक्षण विधि को ही आधार बनाना चाहिये।

जैसे—वाक्य है "अनार मीठा है।" अब बालक कई रूप में इस वाक्य को देखेगा—

(i) मीठा है अनार, (ii) अनार है मीठा, (iii) है अनार मीठा, (iv) मीठा अनार है, (v) है मीठा अनार।

इस प्रकार बालक बार-बार इन वाक्यों को देखेगा, उच्चारण करेगा, इनको सुनेगा तो इन शब्दों का पहचानने में समर्थ हो जायेगा।

(9) साहचर्य विधि—इन विधि का प्रयोग अक्षरों को पहचानने के लिए किया जाता है। साहचर्य विधि की आविष्कारक श्रीमती मॉण्टेसरी है। इस विधि के अनुसार कई प्रकार के चित्र तथा खेलने की वस्तुएँ एक कमरे में एकत्रित कर ली जाती हैं। वस्तुएँ वही होती हैं जो बालकों की अनुभव परिधि के भीतर हों। इन वस्तुओं तथा चित्रों के नाम कार्डों पर लिखा होता है। अब कार्डों को आपस में मिला दिया जाता है। बालक दीवार पर लटके चित्रों तथा कमरे में पड़ी वस्तुओं को देखता है और इन नामों को कार्डों पर ढूँढ़ने का प्रयास करता है। लगातार अभ्यास करते-करते बालक अनेक शब्दों और वर्णों में परिचय प्राप्त कर लेता है। इससे वह पढ़ने में रुचि तथा उत्साह लेने लगता है। इस विधि का प्रयोग केवल प्रारम्भिक कक्षाओं में ही किया जाता है।

(10) कहानी विधि—इस विधि को हम वाक्य-शिक्षण विधि का दूसरा रूप कह सकते हैं। अनेक चित्रों के संयोग से कहानी बालकों को सुनाई जाती है, चित्रों के नीचे बड़े-बड़े अक्षरों में वाक्य लिख दिये जाते हैं। ये वाक्य कहानी से सम्बन्धित होते हैं। कहानी विधि छोटे बालकों के लिए विशेष रूप से लाभदायी है, क्योंकि छोटे बालक कहानी सुनाना अधिक पसन्द करते हैं। अतः कहानी विधि सर्वोत्तम विधि है।

Scanned with CamScanner